ट्युबरक्युलोसिस की सामान्य जानकारी

ट्युबरक्युलोसिस (टीबी) क्या है?

ट्युबरक्युलोसिस मायकोबेक्टेरियम ट्युबरकयूलोसिस नामक छोटे से जीवाणुओं (बेक्टेरीया - जर्म्स) की वजह से होता हुआ एक रोग है. उस के और नाम हैं "टीबी", "कंझम्पशन", "सफैद प्लेग", और "कोख्स रोग", या "क्षय रोग", "तपेदिक" या "यक्ष्मा".

टीबी एक गंभीर रोग है जो आम तौर पर तो फेफड़ों पर असर करता है, परन्तु वह शरीर के दूसरे भागों में भी पाया जाता है, जैसे कि लसिका ग्रन्थि, गुर्दे, हड्डियां, रीढ़ या दिमाग. सामान्यत: जिन्हें सक्रिय टीबी हो, वे अस्वस्थता का अनुभव करते हैं, उन्हें लक्षण दिखाई देते हैं, और वे दूसरों को छूत भी लगा सकते हैं. टीबी का इलाज यदि ठीक से नहीं हुआ तो वह घातक हो सकता है. टीबी के बेक्टेरिया को मार डालने वाली दवा से टीबी को होने से रोका जा सकता है, उस का इलाज किया जा सकता है और उस से मुक्ति भी मिल सकती है।

टीबी कैसे फैलता है?

टीबी के जीवाणु हवा में से फैलते हैं। जब किसी इन्सान के फेफड़ों में, फुप्फुसावरण या गले में टीबी के जीवाणु होते हैं, तब वह अपनी खाँसी, छींक, बोलने, हंसने, गाने से या सुषिर वाद्य को बजाने से उन जीवाणुओं को हवा में फैलाता है।

टीबी के जीवाणु हवा में घंटों तक रह सकते हैं। जिस को सक्रिय टीबी है ऐसे व्यक्ति के साथ जो लोग हर रोज़ काफ़ी समय बिताते हैं, वे अपनी साँस के साथ साथ उन जीवाणुओं को भी अपने फेफड़ों में उतारते हैं और खुद बीमार हो जाते हैं। ये लोग आप के घर में रहने वालों में से हो सकते हैं या आप के परिवार में से, नज़दीकी दोस्तों में से, सहाध्यायी या सहकर्मचारी में से हो सकते हैं।

- हर सक्रिय टीबी का रोगी संक्रामक नहीं होता। फेफड़ों और गले के टीबी के अलावा दूसरे अंगों के टीबी को दूसरों में नहीं फैलाया जा सकता।
- हाथ मिलाने से, बरतन बाँटने से, टोयलेट की सीट पर बैठने से, उन का तौलिया इस्तेमाल करने से या यौन सम्बन्ध से टीबी को दूसरों में नहीं फैलाया जा सकता।
- टीबी के जीवाणुओं के संसर्ग में आये हुए ज़्याादातर लोगों को टीबी की छूत नहीं लगती या रोग नहीं होता।

टीबी की बीमारी लगने का डर किन को हो सकता है?

टीबी किसी को भी लग सकता है। कुछ लोग को ज़्यादा ख़तरा रहता है और उन्हें परीक्षण करवाना चाहिये। वे लोग हैं:

- जो संक्रामक टीबी के रोगी के नज़दीकी सम्पर्क में हों
- उन देशों के आप्रवासी हों जहां टीबी का ख़तरा भारी रहता हो
- जिन्हें दूसरी बीमारीयां हों या जो लोग इम्युन सिस्टम (प्रतिरक्षा तन्त्र) को निर्बल बना देने वाली दवायें लेते हों (जैसे कि मधुमेह - डायाबीटीस, केन्सर या एच्आइवी /एड्स)
- जो कुपोषित हों, निराश्रित हों, या शराब या ड्रग्स का ग़लत प्रयोग करते हों

ट्युबरक्युलोसिस की सामान्य जानकारी..जारी

- जो दीर्घकालिन आरोग्य-देखभाल संस्था या सुधारात्मक संस्थाओं के निवासी हों
- टीबी के भारी ख़तरे वाले आदिवासी या इन्युइट जाति के जनसमुदाय में रहते हों

एलटीबीआई (लेटन्ट टीबी इन्फेक्शन – अप्रकट टीबी संक्रमण) और टीबी रोग में क्या फर्क है?

जिन्हें अप्रकट टीबी संक्रमण हो उन के शरीर में जीवाणु सोये हुए (सुषुप्त या निष्क्रिय) होते हैं। वे बीमार नहीं होते और वे दूसरों में टीबी फैला भी नहीं सकते। मगर भविष्य में वे टीबी रोग से बीमार हो सकते हैं। टीबी के रोग को होने से रोकने के लिये अप्रकट टीबी संक्रमण का इलाज किया जा सकता है।

जिन्हें सक्रिय टीबी रोग हो उन के शरीर में जीवाणु बढ़ते हैं और फैलते हैं। वे बीमार हैं और अगर सक्रिय रोग उन के फेफड़ों में या गले में हो तो वे दूसरों में टीबी फैला सकते हैं। टीबी के जीवाणुओं को मार डालने वाली दवा से टीबी रोग का इलाज किया जा सकता है। टीबी के सभी जीवाणुओं को मार डालने के लिये तथा रोग से मुक्ति पाने के लिये दवा कई महीनों तक लेनी पडती है।